बी० ए० II समाजशास्त्र 25/1/2021

PAGE NO.:
DATE: / /

उद्विकास (Evolution)

उद्विकास एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है। सामाजिक परिवर्तन के अनेक रूप हैं, जिसमें उद्विकास एक है। अवधारणा का प्रतिपादन सर्वप्रथम एक महान जीवशास्त्री चार्ल्स डार्विन ने किया। डार्विन ने माल्थस के अतिरिक्त जनसंख्या तथा परिणाम स्वरूप पनपने वाले 'अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष' के सिद्धान्त पर आधारित करके ही उद्विकास की अवधारणा का अध्ययन किया था।

उद्विकास का अर्थ –

उद्विकास का अंग्रेजी शब्द (Evolution) की उत्पत्ति लैटीन शब्द (Evolvere) से मानी जाती है जिसका शाब्दिक अर्थ 'बाहर की ओर प्रकट होना' माना जाता है इस रूप में उद्विकास का तात्पर्य किसी वस्तु का बाहर की ओर बढ़ना या फैलाव से है।

उद्विकास एक सामाजिक प्रक्रिया है यह एक निश्चित दिशा में निरन्तर होता है प्रकृति में यह गुणात्मक होती है।

PAGE NO.:
DATE: / /

हरबर्ट स्पेन्सर — "उद्विकास पदार्थ का समन्वय तथा उससे सम्बन्धित गति है जिसका दौरान पदार्थ एक अनिश्चित असम्बद्ध समानता से निश्चित सम्बद्ध भिन्नता में बदलता है।

आर० एम० मैकईवर एंव सी० एच० पेज के अनुसार — "उद्विकास परिवर्तन की एक दिशा है। जिसमें कि बदलते हुए पदार्थ की बहुत सी दिशाएं प्रकट होती हैं और जिनसे कि उस पदार्थ की असलियत का पता चलता है।"

डब्ल्यू० एफ० आगबर्न एंव एम० एफ० निमकॉफ के अनुसार —

"उद्विकास केवल एक निश्चित दिशा में परिवर्तन है।"

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि उद्विकास परिवर्तन की ऐसी भिन्नि व्यक्ति है जिसके पदार्थ की आन्तरिक संरचना में ही वह तत्व मौजूद है।

उद्विकास की विशेषताएँ —

उद्विकास की अवधारणा को और अधिक स्पष्ट रूप से जानने के लिए इनकी मूल विशेषताएं होगी। ये विशेषताएं निम्नलिखित हैं —

(1) परिवर्तन की प्रक्रिया —

उद्विकास परिवर्तन की एक प्रक्रिया है। पेज के अनुसार - "उद्विकास परिवर्तन की एक दिशा है" इस प्रक्रिया के अन्तर्गत व्यक्ति व समाज व वनस्पति जगत की विशेषताओं में परिवर्तन है.

गुणात्मक परिवर्तन — उद्विकास की प्रकृति गुणात्मक है गुणात्मक होने कारण पदार्थ के ढांचे व कार्यों में अन्तर उत्पन्न करता है। मानव शरीर को ही लिया जाय। प्रारम्भ में शरीर की संरचना सरल होती है।

निरन्तरता — उद्विकास की एक खास विशेषता निरन्तरता है. मैकाइवर एवं पेज इसी सन्दर्भ में परिभाषा दी है "तब निरन्तरता उद्विकास प्रक्रिया की आवश्यक प्रकृति है।"

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया